INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 2, February 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

हिंदी भाषा के विद्यार्थियों के लिए रोजगार के अवसर

प्रा.डॉ.मंगल मिलिंद कांबळे
विद्या प्रतिष्ठान का,
कला , विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय विद्यानगरी,
बारामती, जिला - पुणे (महाराष्ट्र) 413 133

सारांश :

आज का समय बदल गया है,समाज बदल रहा है। मनुष्य का जीवन अधिक जटिल गतिशील और चुनौती भरा हो गया है। मीडिया, ग्लोबलाइजेशन, राष्ट्रीय उद्योग और वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण अन्य सभी क्षेत्र के साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में कई चुनौतियां और अवसरों का निर्माण हो रहा है। ज्ञान के क्षेत्र में शाखा -उपशाखाओं का विकास होने लगा और विद्या के विभिन्न क्षेत्र युवकों के लिए खुले होने लगे। इस परिवर्तन पूर्ण प्रक्रिया में विज्ञान ,प्रौद्योगिकी, वाणिज्य, व्यवस्थापन की प्रासंगिकता और व्यापकता बढ़ रही है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था की नींव प्रसार, सुसंस्कारी नागरिक का निर्माण राष्ट्रभाषा की चेतना जागृति रही हैं । आज शिक्षा शैक्षिक अर्हता का संबंध जीविका चलाने तथा व्यवसाय -रोजगार के साथ जोड़ दिया जाता है। जो शिक्षा रोजी-रोटी की प्रणाली में सहाय्यक है, उसी की ओर आज की पीढ़ी आकर्षित हो रही है। बेरोजगारी की समस्या हल करने का साधन रोजगारोन्मुख शिक्षा पाठ्यक्रम ही है ।

आज किताबी शिक्षा की अपेक्षा रोजगार की शाश्वती देने वाली शिक्षा आवश्यक बनी है। हिंदी अवसर के क्षेत्र शिक्षक, अध्यापक, विभिन्न उद्यम, अनुवाद, ब्यूरो कार्यालय, केंद्र सरकार के कार्यालय, वृत्तपत्र समूह, डॉक्टर, वकील, व्यवसायी, प्रकाशन संस्था, मॉल, कॉरपोरेट्स, शैक्षिक संस्था, शोध संस्था, बैंक, मार्केटिंग क्षेत्र, मीडिया, निर्मितीगृह, विज्ञापन कंपनियां, होटल, परिवहन, इलेक्ट्रॉनिक माध्यम आदि। रोजगार आज के युग की बड़ी ज्वलंत समस्या है। प्रत्येक विद्यार्थी अपनी पढ़ाई के दौरान इस विषय पर मंथन जरूर करता है कि वह जिस विषय में शिक्षा प्राप्त कर रहा है, उसमें उसके लिए रोजगार की कितनी संभावनाएं हैं। हिंदी भाषा का यही कौशल रोजगार के कितने शुअवसर छात्रों को प्राप्त होते है इस विषय पर चर्चा करेंगे

बीज शब्द : -

भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण ,रोजगार, शिक्षा, सूचना, संभावनाएं, कंपनियां, भाषा कौशल, मीडिया

प्रस्तावना :-

भाषा वह माध्यम या साधन है जिसके द्वारा हम बोलकर यामी लिखकर अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। हिंदी एक भाषा है, जिसे भारत की राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा, तथा भारतवर्ष की मातृभाषा होने का गौरव प्राप्त हुआ है, इस दृष्टि से हिंदी भाषा की स्थिति अत्यंत गरिमामयी है। हिंदी भाषा भारतीय संस्कृति की वाहक है। हिंदी में रोजगारों का विचार हम करें तो यह कहना अनुचित न होगा कि आजकल रोजगारों में हिंदी का प्रयोग दिन-ब-दिन बढ़ रहा है। देश के कोने कोने में हिंदी अपनी पकड़ बना रही है। हर क्षेत्र में हिंदी छा रही है । हिंदी बोलने और समझने वालों की संख्या बढ़ती ही जा रही है।

इस विषय पर चर्चा होना आवश्यक है कि किसी विद्यालय या विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में किसी विषय को क्यों पढ़ाया जाता है? उस विषय में रोजगार की संभावनाएं कितनी है? सबसे पहले भाषा का कौशल इस दृष्टि से अध्ययन किया जाए तो हमें पता चलता है भाषा का प्रथम कार्य समाज को विचार विनिमय अर्थात संप्रेषण की योग्यता प्रदान करना। ज्ञानार्जन तथा सदुपयोग में हिंदी भाषा हमेशा अव्वल स्थान पर है। अपने इसी औचित्य के आधार पर हिंदी भाषा अपना मातृभाषा से लेकर राजभाषा तक का सफर सफलतापूर्वक पूरा किया है। इसके साथ हिंदी भाषा में यही कौशल है कि रोजगार की भी अपार संभावनाएं हैं। हिंदी भाषा का अध्ययन करने वाले छात्रों को निराश होने की आवश्यकता नहीं है। हिंदी भाषा में पर्याप्त क्षमता है जो लोगों को रोजगार तक ले जा सकती हैं।

आज हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता को देखकर अंग्रेजी के लोग भी हिंदी मीडिया की ओर आकर्षित हो रहे हैं। किसी भी भाषा में निपुणता के लिए उस पर पकड़ बनाना अनिवार्य होता है। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में हिंदी सही अर्थ में वैश्विक भाषा बनी है। भारतीय संविधान से प्राप्त अवसर और वैश्वीकरण के दौर में बढ़नेवाली नई जरूरतों ने हिंदी में अनेक रोजगार उपलब्ध कराए हैं। कहना समीचीन होगा कि विभिन्न प्रादेशिक भाषाएं मराठी, हिंदी, तेलुगु ,कन्नड़ ,मलयालम, असमिया आदि सभी ने रोजगार एवं संस्कारों की असीम संभावनाओं तथा संरचना से विश्व को अवगत कराया है। दुनिया की भाषाओं में हिंदी भाषा अपना अस्तित्व सिद्ध किया है। इसके लिए यह मत अत्यंत अर्थ पूर्ण है - "इंटरनेट की सबसे बड़ी कंपनी गूगल के भारत के प्रमुख राजन आनंद ने बीते दिनों में एक साक्षात्कार में कहा , इंटरनेट पर अगले 30 करोड़ नए यूजर्स अंग्रेजी नहीं बल्कि भारतीय भाषाएं बोलने वाले होंगे"। **1**

आज भारतवर्ष में ही नहीं अपितु विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ-साथ कॉल सेंटर से लेकर शिक्षा, कृषि, चिकित्सा, बैंक, व्यापार, फिल्म, विभिन्न सरकारी संस्थान, एवं कार्यालय जनसंचार माध्यम आदि अन्यान्य क्षेत्र में हिंदी अध्येताओं के लिए रोजगार की असीम संभावनाएं परिलक्षित होती है। प्रस्तुत आलेख में हिंदी भाषा कौशल और छात्रों के लिए रोजगार के सुअवसर इन प्रतिनिधिक पहलुओं को केंद्र में रखा है।

हिंदी के विद्यार्थियों के लिए रोजगार के अवसर :

1) इलेक्ट्रॉनिक तथा प्रिंट मीडिया में रोजगार :-

इसमें हिंदी अध्येताओं को असीम संभावनाएं है। आज टी.वी पर सैकडो चैनल है, जहां अच्छे निवेदकों की, स्क्रिप्ट लेखकों की, निर्देशकों की मांग है। दुर्भाग्यवश आज भी हम इस क्षेत्र की व्यापक मांग की पूर्ति नहीं कर पाते हैं। इसका स्पष्ट कारण यही है कि हम हिंदी भाषा के कौशल को नहीं अपनाते। उसके संरचनात्मक तथा प्रकृति गति ज्ञान से अवगत होने की चेष्टा नहीं करते बल्कि हम हिंदी के सिर्फ वाह -वाही करना ही जानते हैं। पत्रिकाओं को देखा जाए तो ऑनलाइन तथा ऑफलाइन डेढ़ सौ से अधिक हिंदी पत्रिकाएं हैं, जहां हिंदी के अच्छे विशेषज्ञ की कमी महसूस होती है। संपादक, प्रोफेसर, सहसंपादक, अनुवादक आदि अवसर है। जहां रोजगार की समस्या का हल किया जाता है। सचमुच रोजगार के माध्यम से आज हिंदी को अनेक आयाम मिल रहे हैं।

हिंदी के माध्यम से सेवा अवसर एवं रोजगार को बढ़ावा देना होगा, तभी भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी का अस्तित्व सुदृढ़ होकर विकास को प्राप्त कर पाएगा। इस दृष्टि से प्रो. आनंद प्रकाश दीक्षित का अभिमत है :- " साहित्यिक क्षेत्र से हटकर, अब हिंदी के विकास और इसकी समृद्धि के लिए ज्ञान, विज्ञान, तकनीकी, उद्योग आदि के इतने क्षेत्र खुल गए हैं कि उसकी नानाविध अभिव्यक्ति शैलियां तैयार हो गई है और प्रयोग की नई संभावनाएं आती जा रही है। भाषा बहता नीर है। जीवित रहने के लिए उसे प्रयोग धर्मी और यथावश्यक सर्व समावेशन बनाना होगा।" **2**

2) पत्रकारिता के क्षेत्र में :-

हिंदी के छात्रों को पत्रकारिता रोजगार का एक आकर्षक विकल्प है। यहां मेहनती और प्रतिभावान युवाओं के लिए बहुत संभावनाएं हैं। इस समय सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले समाचार पत्रों और सबसे ज्यादा देखे जाने वाले समाचार चैनलों में दो - तिहाई से अधिक हिंदी भाषा के ही है। समाचार चैनलों और अखबारों के अलावा भी हिंदी के अनेक चैनल और पत्र पत्रिकाएं हैं, जो सुयोग्य युवाओं के स्वागत में तैयार खड़े हैं। इसमें सफल होने के लिए आवश्यक है कि हिंदी भाषा पर आपकी पकड़ बहुत अच्छी हो। अपनी बातों में सरलता, सहजता, अभिव्यक्त हो। पत्रकारिता में आने की इच्छा रखने वाले छात्रों को अपने आसपास घटित होने वाली घटनाओं के प्रति सजग और संवेदनशील होना भी जरूरी है। विशेषतः मेहनत, लगन, जोखिम उठाने की हिम्मतवाले पत्रकार को आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। सच यह है कि पत्रकार के लिए यह कहा जाता है कि :-

"खबरों की खबर रखते हैं

अपनी खबर हमेशा ढंकते हैं "।3

3) अनुवादक और दुभाषियां :-

अनुवादक का क्षेत्र वाकई सबसे बड़ा है। दुनिया भर में जैसे-जैसे हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है वैसे-वैसे अनुवादकों और दो भाषाओं की मांग भी बड़ी शिद्दत से हो रही है। अनेक देशी- विदेशी, मीडिया, संस्थान, राजनीतिक संस्थाएं, पर्यटन से जुड़े संस्थान तथा बड़े-बड़े होटलों में अनुवाद तथा दुभाषियों की आवश्यकता बढ़ रही है। छात्रों को अपने अनुरूप अवसरों की तलाश चाहिए ताकि इस क्षेत्र में वह अपना भविष्य सुरक्षित कर सके।

4) विज्ञापन का क्षेत्र :-

विज्ञापन की दुनिया हिंदी से सराबोर है। कंपनियां राष्ट्रीय हो या बहुराष्ट्रीय अपना उत्पाद बेचने के लिए हिंदी का अधिकतम उपयोग करते हैं। हिंदी भाषा के लोचपूर्ण प्रकृति विज्ञापन के लिए बहुत लाभदायी, उपयोगी, तथा महत्वपूर्ण है। विज्ञापन कंपनियों में अच्छे 'स्लोगन' बनाने वालों के लिए अच्छा सा वेतन दिया जाता है। वर्तमान में बाजार में प्रतिभावान हिंदी कॉपीराइटरों की बड़ी मांग है। हिंदी में विज्ञापन बनाने वाले संभवतः सबसे अधिक धन हासिल करते हैं। कुछ विज्ञापन :- 'पड़ौसी की जेलें जान, आपकी बड़े शान', ' बुलंद भारत की बुलंद तस्वीर' , 'आम के आम, गुठलियों के दाम' , 'ठंडा मतलब..... यह ऐसे विज्ञापन बनाने वालों को लाखों में भुगतान किया जाता है।

5) फिल्मी जगत :-

आजकल हिंदी भाषा में विविध फिल्मों का प्रसारण होता है। फिल्मी जगत वह क्षेत्र है जिसने दुनिया को वैश्विक स्तर पर जोड़ा है। वर्तमान परिदृश्य को केंद्र में रखने पर पता चलता है कि हिंदी फिल्मों के कारण ही फिल्मी दुनिया का अस्तित्व है । फिल्म के माध्यम से हिंदी को वैश्विक स्तर पर सम्मान प्राप्त हो रहा है। आज अनेक फिल्मकार भारत ही नहीं, यूरोप, अमेरिका और खाड़ी देशों के अपने दर्शकों को ध्यान में रखकर फिल्में बना रहे हैं और हिंदी सिनेमा ऑस्कर तक पहुंच रहा है। कई अंग्रेजी फिल्में अन्यान्य प्रादेशिक ही नहीं विश्व की भाषाओं में अनूदित हो रही है। यहां तक की डबिंग भी पर्याप्त मात्रा में हो रहा है। संजय द्विवेदी का कहना सही है कि :- "यह हिंदी की ही ताकत है कि वह सोनिया गांधी से लेकर कैटरीना कैफ सबसे हिंदी बुलवा ही लेती है।........ राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी की सुन लीजिए वे कहते हैं कि प्रधानमंत्री नहीं बन सकते क्योंकि उन्हें ठीक से हिंदी बोलनी नहीं आती। कुल मिलाकर हिंदी आज मीडिया, राजनीति, मनोरंजन और विज्ञापन की प्रमुख भाषा है"**4** इसमें संदेह नहीं की सिनेमा ने हिंदी के लोकप्रियता भी बढ़ाई है और व्यावहारिकता भी।

इसके साथ ही साथ छात्रों को ढेर सारे रोजगार हिंदी में प्राप्त हो सकते हैं। जैसे :- संवाददाता, कार्यालय सहायक, उद्घोषक, संहिता लेखक, प्रशासकीय अधिकारी, हिंदी अधिकारी, तकनीकी लेखक, भाषण-कर्ता, स्तंभ -लेखक, भाषाविद ,संरचनात्मक लेखक, संगणक ऑपरेटर, डीटीपी ऑपरेटर ,समीक्षक, सहायक पात्र, संवाद लेखन, पटकथा लेखक, गीतकार, ध्वनि रिकॉर्ड करने वाला, संगीतकार, डिस्कवरी, नैशनल जियोग्राफी, एनिमल प्लेनेट, हिस्ट्री जैसे कहीं रोजगार छात्रों के सामने है। कार्य करने वाले के सामने हजार रास्ते हैं, न करने वाले के लिए एक भी नहीं। इसलिए सकारात्मक दृष्टि से विचार करने की आदत डालकर किसी भी काम को छोटा ना समझ कर अपनी मंजिल की ओर कदम बढ़ाने चाहिए।

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त विवेचन विश्लेषण के पश्चात कहा जा सकता है कि हिंदी का रोजगार काफी समृद्ध है। इसमें करियरजनक रोजगारपरक एवं जीवन पूरक अभिनव आशावान एवं उज्जवल भविष्य की तरक्कीपूर्ण तलाश रखने वाले रोजगारोंच्छुक हिंदी के छात्रों तथा अध्येयताओं के मन में निश्चय ही आत्मविश्वास, हौसला, आत्मनिर्भरता तथा अस्मिता भाव एवं

आत्मसंबल निर्माण होगा। हिंदी में रोजगार की असीम संभावनाएं नजर आ रही है। यह मात्र हिंदी भाषा का ही नहीं अपितु भारत वर्ष का गौरव कहा जा सकता है। छात्र तथा अध्यापकों का हिंदी भाषा एवं साहित्य के प्रति आस्था, आत्मीयता, ललक एवं रुझान की आवश्यकता चाहिए। बस्स इसके लिए दिल और दिमाग के बंद दरवाजे खोलने होंगे ।बात यही खत्म करूंगी की :-

शौक ए दीदार अगर है

तो नज़र पैदा कर।

संदर्भ सूची :

1) http://www.bbc.co.uk/hindi /science /2013/09/130913

2) रोजगाराभिमुख हिंदी: दिशाएं एवं संभावनाएं : संपादक -डॉ. सुभाष तलेकर
प्रकाशक -सदानंद महाजन, नंदादीप प्रकाशन पृष्ठ -क्र 61

3) ------------ वहीं ----------------- पृ-क्र 97

4) सं. श्रीमती पूनम जुनेजा , विश्व हिंदी समाचार
(विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन) वर्ष-५, अंक-१९ सितंबर, २०१२, पृ-९

• **Copyright & License:**
© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.